ISSN -2393-8048, January-June 2021, Submitted in May 2021, iajesm2014@gmail.com

''साहित्य की प्रवृत्तियों में बाल साहित्य एक अध्ययन''

डॉ0 स्वाति रैया, सहायक आचार्य, वनस्थली विद्यापीठ

परिचयात्मक विश्लेषण

बीसवीं शताब्दी में हिन्दी भाषा को उसका नैतिक संवेदन और मानव सम्बन्धों की समझ देने में जिन लेखकों ने प्रमुख भूमिका निभाई, उनमें गोविन्द शर्मा का नाम प्रायः स्मरणीय है। उन्होंने हिन्दी बाल साहित्य की सरंचना, सम्भावना और संवेदना को एक अलग दिशा दी है। साहित्यकार जाति, सम्प्रदाय, धर्म से कहीं ऊंचे आदर्श लेकर अपने साहित्य भंवर का शिलान्यास करता है और फिर इन तीनों में किसी के साथ बंधने का अर्थ है, एक का होकर बहुतों से दूर हट जाना। इसी तरह किसी को छोड़ना भी कमत्तर संवेदना का परिचायक हो जाता है। बालक किसी भी जाति, धर्म या सम्प्रदाय का हो उस पर इनका रंग नहीं चढ़ता है।

इनके दादा जी के पास उर्दू और हिन्दी में धार्मिक साहित्य का बड़ा संग्रह था। इनके पिता जी स्वतन्त्रता सेनानी थे। इन दिनों हिन्दी साहित्य पढ़ना भी देशभक्ति की भावना का परिचायक था। इनको बचपन से ही घर पर साहित्यिक वातावरण मिला जिससे बचपन में ही साहित्य के प्रति प्रेम जाग गया था। इनके व्यक्तित्व का एक अभिन्न अंग बचपन से ही साहित्य हो गया था। साहित्य ने इनको बचपन से ही संवेदनशील बना दिया। संवेदना जब अभिव्यक्ति पाने लगती है तो साहित्यकार का जन्म होता है। इनकी संवेदना की अभिव्यक्ति पहले पहल दो व्यंग्य और दो बाल कथाएँ लिख कर हुई। अतः गोविन्द शर्मा जी आरम्भ से व्यंग्यकार और बाल साहित्यकार दोनों हो गये। गोविन्द शर्मा जी की अपनी विशेषता है कि यह आज भी अपने को पुराना या रिटायर्ड लेखक नहीं मानते हैं।

जितनी सरल इनके साहित्य की भाषा है उतना ही सरल इनका व्यक्तित्व भी है। ''गोविन्द शर्मा मधुर मनोहारी मनोवृति के सरल व्यक्ति है और प्रेम तथा श्रद्धा का अनुभव गहराई से करते हैं। यही कारण है कि प्रेम और श्रद्धा के कारण उनकी बालकथाएं उन छोटी–छोटी बारीकियों को छूती है जिनकी अर्थवत्ता बड़ी–बड़ी बातें बनाकर प्रकाशमान होती है।'' विनम्रता व्यक्तित्व को निखारती है। साहित्यकार को विनम्र होना चाहिए लेकिन मैं नहीं समझती कि लेखन में विनम्रता कहीं आड़े आती है। लेखक होने के साथ एक सामाजिक होना विनम्रता का द्योतक भी होता है। गोविन्द शर्मा में विनम्रता बचपन से ही आ गयी थी। ''वे बेहद विनम्र व्यक्ति है।

परिचयात्मक शोध का महत्त्व

मेरे दादा जी के पास उर्दू और हिन्दी में धार्मिक साहित्य का बड़ा संग्रह था। मेरे पिता जी स्वतन्त्रता सेनानी थे। उन दिनों हिन्दी साहित्य पढ़ना भी देशभक्ति की भावना का परिचायक था। पुस्तकों के अलावा विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ भी उनके पास आती थी। स्वतन्त्रता के लिए जेल–यात्रा के दौरान अध्ययन में उनकी रूचि बढ़ गयी थी। इस तरह मुझे बचपन से ही एक ऐसा वातावरण मिला जिसमें साहित्य पढ़ना दिनचर्या का एक आवश्यक अंग बन गया। बचपन में साहित्य प्रेम के इस बीजारोपण का प्रस्फुटन सन् 1971 में हुआ। एक दिन एक साथ दो व्यंग्य और दो बाल कथाएं लिखी। चारों रचनाएँ पन्द्रह दिन के भीतर उस समय की बड़ी संख्या में प्रसारित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो गई। एक साहित्यकार समाज से जुड़कर ही जिन्दा रह सकता है। समाज से कटाव उसके अन्दर के साहित्यकार की मृत्यु है। समाज में घटने वाली घटनाऍं उसके अन्तर्मन पर निरन्तर प्रभाव डालती है। ये घटनाएं ही साहित्य लेखन में कच्चा माल व प्रेरणा दोनों हो जाती है।

परिचयात्मक शोध के सोपान

महाराजा गंगासिंह की तस्वीर लगे एक स्टाम्प पेपर की तहरीर ने पिता का नाम और राज्य ही बदल दिया। इन्हें इनकी विधवा और निःसंतान ताई को गोद दे दिया गया। अब इनके पिता का नाम श्री डूंगरमल शर्मा की जगह श्री बजरंगदास शर्मा हो गया और राज्य हो गया तत्कालीन पंजाब। चौटाला में इनका बचपन बीता जो कि अब हरियाणा में है। दूसरी विशिष्ट घटना यह उसे मानते हैं जब इन्हें इनके पहले बालकथा संग्रह 'चालाक चूहे और मूर्ख बिल्लियाँ पर 'श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया बाल साहित्य पुरस्कार' मिला। जब पुरस्कार समिति के एक सदस्य ने इन्हें बताया कि आपकी पुस्तक की शक्ल देखकर एक बार उसे हमने अलग रख दिया था, यह सोचकर कि इसमें क्या होगा? फिर सोचा पढ़ लेते हैं। जब इसको पढ़ा तो पुरस्कृत करने के लिए मज़बूर हो गय

आने वाले कल के गर्भ में क्या छिपा है, यदि यह ज्ञात हो जाता तो न जाने वह कितने प्रयत्न कर गुजरता कि अनिष्ट की आशंका से बचा रहे। लेकिन परमात्मा ने उसे यह जानने का अधिकार नहीं दिया। मुनष्य केवल नियति का भोक्ता है। घटने वाली घटनाओं पर उसका वश नहीं। वह तो सिर्फ घटते देखता है कभी खुद पर, कभी दूसरों पर। गोविन्द शर्मा के बड़े बेटे प्रदीप का विवाह 15 मई 1991 को हुआ। 23 मई 1991 को प्रदीप अपनी पत्नी के साथ मोटर साइकिल पर घूमने गया था। फिर घर वापस नहीं आया। एक जीप के साथ दुर्घटना में उसका देहांत हो गया। इनके पूरे परिवार पर जैसे वज्रपात हुआ। खुशी का माहौल गम में बदल गया।

परिचयात्मक शोध के उद्देश्य

साहित्यकार जहॉं–जहॉं मूल्यों का पतन देखता है वहीं चोट करता है। बाल साहित्यकार चोट नहीं कर सकता है। उसे निर्माण करना होता है। युवाओं और बालकों में हो रहा मूल्यों का पतन उसके लिए चुनौती है, यही उसके लिए प्रेरणा है।

गोविन्द शर्मा सामाजिक चेतना के स्तर पर या राजनैतिक समझ के स्तर पर यहाँ तक कि साहित्यिक चेतना के स्तर पर भी अपने को पूर्णतः समाज से जुड़ा हुआ पाते है। सामाजिक मूल्यों के स्तर पर उनकी दृष्टि हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के कथन का अनुसरण करती है कि ''सभी पुराने अच्छे नहीं होते और सभी नये खराब नहीं होते।

परिचयात्मक शोध का निष्कर्ष

विडम्बना यह भी है कि आज भारतीय संस्कृति जहाँ पश्चिम से प्रभावित हो रही है, वहीं हिन्दी का स्थान भी अंग्रेजी लेती जा रही है। हैरत होती है जब देश की राष्ट्रभाषा कहलाने वाली हिन्दी संसद की भाषा नहीं बन पाती है। साहित्यकार लगातार उलझन में है। विदेशी भाषा के प्रति बढ़ता मोह हमारी हिन्दी के लिए खतरा है। बालकों को जिस सख्ती के साथ अंग्रेजी सीखने के लिए प्रताड़ित किया जाता है, यह उनके कोमल मन पर कुठाराघात है।

ऐसा नहीं है कि केवल बाल साहित्य तक इनकी लेखनी ठहरी है। श्री पूरन मुद्गल लिखते हैं ''व्यंग्यकार के रुप में गोविन्द शर्मा एक सुपरिचित नाम है। दिल्ली से प्रकाशित एक पत्रिका में नियमित स्तम्भ लेखन तथा राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में व्यंग्य लेखों के माध्यम से उन्होंने व्यंग्य–विधा में अपनी पहचान दर्ज की है।''

ग्रामोत्थान विद्यापीठ से जुड़े होने के कारण इनमें इन गुणों का विकास निरन्तर होता रहा है। एक साहित्यकार होने के साथ–साथ एक निष्ठावान, ईमानदार कर्मचारी होने का गौरव इनके पास है। यही कारण है कि सेवा निवृत होने के बाद भी संस्था ने इन्हें छोड़ा नहीं है। समाज उत्थान के प्रति सच्ची लगन और मातृत्व की भावना साहित्यकार को समाज में स्थापित करती है। गोविन्द शर्मा एक सफल पिता, समाजसेवी, कर्मचारी रहे है। जब कोई कहानी लिखी जाती है तो उसके पीछे एक कहानीकार अवश्य होना चाहिए और उस कहानीकार के पीछे एक राष्ट्र, उसकी संस्कृति, उसके वर्तमान के सर्व समावेशी परिवेश का रहना अनिवार्य है, अन्यथा कहानी, कहानी नहीं होगी, फिर चाहे उसे कुछ भी कह लें कहानी मात्र लेखन नहीं होता, उसे कहानी होना होता है, साहित्य होना होता है और उस रुप में उसका एक गुरू–गम्भीर दायित्व होता है।

यह दायित्व होता है, उस राष्ट्र और संस्कृति के लिए लेखक द्वारा आत्मोपलब्धि के माध्यम से मूल्य–उपलब्धि करना क्योंकि आज के कवि को कल का बुजुर्ग, परम्परा, इतिहास और संस्कृति बनना है। गोविन्द शर्मा कल एक बुजुर्ग, परम्परा, इतिहास और संस्कृति बनने का पूरा मादा रखते है। इनकी कलम में नये मूल्य निर्माण की ताकत भी है और पारम्परिक मूल्य के संरक्षण की सबलता भी है। आज गोविन्द शर्मा एक व्यक्ति न होकर संस्था है। मूल्य सर्जन और देश में मानवता के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची :

1. चालाक चूहे और मूर्ख बिल्लियां
   लेखक : गोविन्द शर्मा
   प्रकाशक : भारत ग्रंथ निकेतन, तेलीवाड़ा, बीकानेर द्वारा विकास आर्ट प्रिंटर्स दिल्ली में मुद्रित
   संस्करण : 1986
2. सबका देश एक है
   लेखक : गोविन्द शर्मा
   प्रकाशक : ग्रन्थविकास, सी–37, राजापार्क, आदर्शनगर, जयपुर
   संस्करण : 1999
3. सवाल का बवाल
   लेखक : गोविन्द शर्मा
   प्रकाशक : भारत ग्रंथ निकेतन, दाऊजी मंदिर रोड, बीकानेर
   संस्करण : प्रथम 2001
4. मुझे तारे चाहिए
   लेखक : गोविन्द शर्मा
5. कालू कौवा
   लेखक : गोविन्द शर्मा